कुछ तो खास है

7. **'ननकू' कहानी में कई जगह खास तरह की भाषा/शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनके अर्थ बताइए –**

- घुप्प अँधेरा – ----------------------------------
- **झिड़की खाना** – ----------------------------------
- धौल खाना – ----------------------------------
- हुलसना – ----------------------------------
- परसिडेंट – ----------------------------------

आपकी बात

1. **ननकू ने अपने साहस भरे कारनामों से अपनी और दादाजी की जान बचाई।** आप भी किसी ऐसी घटना के बारे में बताएँ जब आपने किसी की जान बचाई हो या किसी ने आपकी जान बचाई हो।

2. ननकू के साहस भरे कारनामों के बारे में बताते हुए अपने नानाजी या दोस्त को पत्र लिखिए –

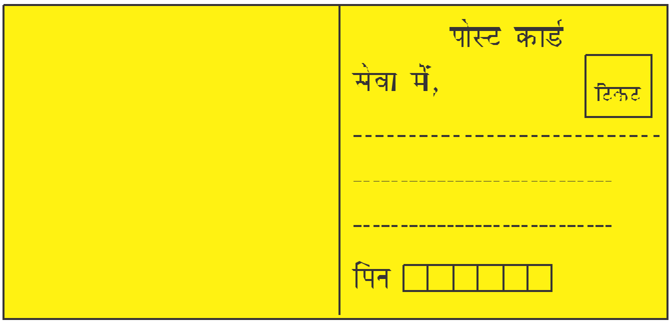

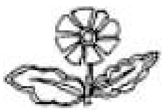

9. ममता की मूर्ति

बहुत साल पहले की बात है। एक बार अमरीकी अधिकारी कैनेडी ने भारत में स्थित सेवा शिविरों का दौरा किया । एक शिविर में उन्होंने देखा कि एक रोगी उल्टी, दस्त और खून से लथपथ पड़ा था । एक महिला पूरे मन से रोगी की सेवा और सफाई में लगी थी । यह दृश्य देख कैनेडी की आँखें खुली की खुली रह गईं । उन्होंने महिला की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा, "क्या मैं आपसे हाथ मिला सकता हूँ।" महिला अपने हाथों को देखकर बोलीं, "ओह ! अभी नहीं, अभी ये हाथ साफ नहीं हैं । "कैनेडी बोले," नहीं–नहीं इन्हें गंदे कहकर इनका अपमान मत कीजिए । ये बहुत पवित्र हैं। इन्हें तो मैं अपने सिर पर रखना चाहता हूँ ।'' यह कहते हुए कैनेडी ने उनके हाथों को अपने सिर पर रख लिया।

ये पवित्र हाथ मदर टेरेसा के थे, जो सचमुच गरीब, असहाय, रोगी, अपाहिज आदि लोगों की माँ थीं। इनका जन्म 27 अगस्त 1910 ई० को युगोस्लाविया के स्पोजे नगर में हुआ था । उनके बचपन का नाम एग्नेस गोन्ज़ा बोजाक्यू था । माँ का नाम ड्रानाफिल तथा पिता का नाम निकोलस था ।

बचपन से ही उनके मन में सेवा का भाव था । इसी कारण उन्होंने 'नन' बनने का निश्चय किया । 1928 ई० में वे दार्जिलिंग के लोरैटो कान्वेंट में शिक्षिका बनकर भारत आईं। 1929 ई० में उन्होंने कोलकाता के सेंट मेरी हाईस्कूल में पढ़ाना शुरू किया। बाद में वे इसी विद्यालय की प्रधान शिक्षिका बन गईं ।

गरीबों, असहायों, रोगियों को देखकर, इनका दिल सेवा के लिए मचलता रहता था। आखिरकार 1948 ई० में उन्हें विद्यालय छोड़ने की अनुमति मिल गई । अब उन्होंने अपना जीवन दुखियों, गरीबों, कुष्ठ रोगियों आदि की सेवा में लगा दिया । अब पूरी दुनिया में उनकी पहचान 'मदर टेरेसा' के रूप में हुई । उन्होंने नीली किनारी वाली सफेद साड़ी पहनना शुरू कर दिया । बाद में यह पहनावा सेवा भाव रखने वाली नर्सों की पहचान बन गया।

नर्स की ट्रेनिंग लेने के बाद उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र एक बार फिर कोलकाता

बनाया। एक बार की बात है मदर टेरेसा एक ऐसी बुढ़िया को अस्पताल ले गईं जिसका शरीर चूहों और चींटों ने कुतर डाला था । वह अंतिम साँसें ले रही थीं । डॉक्टरों ने उसका इलाज करने से मना कर दिया । मदर उसे अपनी बाँहों में उठाकर दूसरे अस्पताल की ओर दौड़ीं, लेकिन उस बुढ़िया ने उनकी बाँहों में ही दम तोड़ दिया।

इसके बाद मदर ने प्रण किया कि अब ऐसे मरणासन्न अनाथों के लिए कहीं घर की व्यवस्था करनी होगी। इसीलिए कोलकाता में ही उन्होंने ''निर्मल हृदय'' नामक घर की स्थापना की । यह घर क्या था, एक जीर्ण-शीर्ण कमरा था, जिसमें दो पलंग रखे गए थे । जब कभी भी उन्हें कोई असहाय, लावारिस और बीमार व्यक्ति दिखता था, वे उसे 'निर्मल हृदय' संस्थान में ले आतीं । यहाँ स्नेह, सहानुभूति एवं प्यार के साथ उसकी सेवा और उपचार करतीं। कार्य एवं सेवा के विस्तार के साथ उन्हें खूब प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वर्ष 1950 ई॰ में उनकी संस्था को 'मिशनरीज़ ऑफ चैरिटीज़' की मान्यता मिल गई ।

मदर टेरेसा ने शिशु सदन, प्रेम घर और शांति नगर की भी स्थापना की ।

मदर टेरेसा अपने कार्यों को खुद करती थीं । रोगियों का मल-मूत्र या घावों की सफाई भी वे खुद करती थीं । ये काम उन्हें काफ़ी आनंद देता था । इनके कार्यों से प्रभावित होकर भारत सरकार ने उन्हें **भारत रत्न** से सम्मानित किया । **नोबेल पुरस्कार** जो दुनिया का प्रसिद्ध पुरस्कार है, वह भी उन्हें प्राप्त हुआ ।

सेवा, शांति, भाईचारा, परोपकार आदि की रौशनी मदर टेरेसा 5 सितंबर 1997

को हमें छोड़कर स्वर्गवासी हो गईं। आज 'माँ' हमारे बीच नहीं हैं। मगर उनकी यह उक्ति हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है कि आपको विश्व में जहाँ कहीं भी दुखी, रोगी, बेसहारा, असहाय आदि लोग मिलें वे आपका प्यार पाने के हकदार हैं। उन्हें आपकी मदद चाहिए ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

असहाय	–	जिसका कोई सहायता करने वाला नहीं है
जीर्ण-शीर्ण	–	टूटा-फूटा
प्रण करना	–	प्रतिज्ञा करना
नन	–	सेवा भाव रखनेवाली अविवाहित स्त्री

अभ्यास

आपकी कलम से

1. मदर टेरेसा के बारे में वताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
2. अनेक ऐसी महिलाएँ हैं जिन्होंने अपने कार्यों से काफी प्रसिद्धि पाई हैं। आप ऐसी किसी एक महिला के बारे में कक्षा में बताएँ। यह महिला आपकी माँ, दादी, नानी, मौसी भी हो सकती हैं।
3. मदर टेरेसा के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक घटनाओं के बारे में पता कीजिए और लिखिए।

सही या गलत

पाठ के आधार पर (✓) या (X) निशान लगाइए–

- मदर टेरेसा का बचपन का नाम मरिया था। ☐
- वे सेवा-भाव के कारण नन बनना चाहती थीं। ☐
- उन्होंने नर्स की ट्रेनिंग ली थी। ☐
- उनका कार्यक्षेत्र कोलकाता था। ☐

- वे कहती थीं – दुखी, रोगी आदि आपकी दया के हकदार हैं। ☐
- 'शिशु-मदन' और 'प्रेमघर' उनकी संस्थाएँ थीं। ☐

2. सही शब्दों से वाक्यों को पूरा कीजिए–

(क) मेरी ------------ बहुत अच्छा पढ़ाती हैं। (शिक्षक/ शिक्षिका)

(ख) ------------ पौधे लगा रहा था। (माली/मालिन)

(ग) मदर को एक ------------ महिला मिली। (बूढ़ा/बूढ़ी)

(घ) मदर टेरेसा ने खूब प्रसिद्धि ------------ । (पाया/ पाई)

(ङ) सभा में अनेक ------------ बैठी थीं। (विद्वान/विदुषियाँ)

पाठ से बताइए

(क) मदर टेरेसा का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) मदर टेरेसा के अनुसार जीवन का मूल मंत्र क्या है?

(ग) किस दृश्य ने मदर टेरेसा का मन मोड़ दिया?

(घ) पीड़ितों के लिए मदर टेरेसा ने किन-किन संस्थाओं की स्थापना कीं?

आपकी समझ से

(क) यदि आपको कहीं घायल व्यक्ति मिले तो आप क्या करेंगे?

(ख) किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाकर आपको किस प्रकार की अनुभूति होगी?

भाषा की बात

1. **"वहाँ अपार जन-समूह एकत्रित था।"** इस वाक्य को वर्तमान काल में इस रूप में लिखा जा सकता है–
"वहाँ अपार जन-समूह एकत्रित है।" निम्नलिखित वाक्यों को वर्तमान काल में लिखें।

(क) उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं था।

(ख) वह महिला कौन थी?

(ग) एक स्त्री सड़क पर लेटी हुई थी।

(घ) वह दर्द से कराह रही थी।

----

2 . निम्नलिखित वाक्यों में 'का', 'के', 'की' भरिए –

(क) यह मेरे जीवन भर --------------- कमाई है।

(ख) बचपन से ही उनके मन में सेवा --------------- भाव था।

(ग) प्रशिक्षण --------------- बाद उन्हें कोलकाता भेजा गया।

(घ) उन्होंने वृद्ध व्यक्तियों --------------- ध्यान रखा।

(ङ) उन्होंने एक नई संस्था --------------- स्थापना की।

3 . 'उनका वास्तविक नाम एग्नेस गोंज़ा बोजाक्स्यू था।' यहाँ **'वास्तविक'** शब्द **'वास्तव'** में **'इक'** लगाकर बनाया गया है। इस प्रकार 'इक' लगे हुए कुछ शब्द लिखिए –

देह + इक = ----------

देव + इक = ----------

शरीर + इक = ----------

नगर + इक = ----------

कुछ करने को

1. एक दिन उन्होंने ऐसा भयानक दृश्य देखा जिसने उनके जीवन की दिशा को नया मोड़ दे दिया। क्या आपको कभी ऐसा दृश्य देखने को मिला है जिसने आपको सोचने के लिए विवश किया हो? बताइए।
2. 'मदर टेरेसा' के अतिरिक्त किसी अन्य समाज सेवक/सेविका के बारे में अपने अध्यापक / अध्यापिका से जानिए।
3. 'मानव-सेवा सबसे बड़ा धर्म है।'' इस विषय पर अपने विचार बताइए।

कुछ करने के लिए

नीचे दिए गए अक्षर जाल में से विशेषण शब्द चुनकर लिखिए-

र	मी	ठा	चा	ला	क
सी	वी	र	ठं	डा	ई
ला	ल	रं	गी	न	मा
ग	र्म	नु	ला	स	न
न	म	की	न	फे	दा
घ	ना	ला	सुं	द	र

....

10. आया बादल

उमड़-घुमड़कर आसमान में,
वह देखो मँडराया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

देखो-देखो, भालू काला,
हाथी मोटा दाँतों वाला;
कितने रूप बनाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

आज संदेशा किसका लाया,
किस मुंडेर पर आया-छाया;
प्यारा-सा मनभाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

वन-उपवन सब गाँव-नगर भी,
नदी-पोखर, ताल-नहर भी;
सबको ही नहलाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

पूरे सावन कजरी गाता,
रिमझिम-रिमझिम गीत सुनाता;
लो पानी बरसाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

दादुर - मोर - पपीहा बोले,
खेतों के मन हरसे डोले;
जैसे ही लहराया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

नीली चादर एक टाँगकर,
किरणों से कुछ रंग माँगकर;
इंद्रधनुष रच लाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

—अखिलेश्वर नाथ त्रिपाठी

शब्दार्थ

संदेशा	–	समाचार
मुंडेर	–	छत के चारों ओर उठे हुए दीवार का ऊपरी भाग
उपवन	–	बगीचा
पपीहा	–	एक पक्षी का नाम
दादुर	–	मेंढक का एक प्रकार

अभ्यास

1. बादलों के बरसने के बाद आपके आस-पास क्या बदलाव नज़र आता है? उस दृश्य का एक चित्र बनाकर रंग भरिए–

2. आपने भी बादलों को गौर से देखा होगा। आपको उनमें किसकी आकृति नज़र आती है? चित्र बनाइए।
3. बारिश आने वाली है। इस बात का अनुमान आप कैसे लगाते हैं?
4. 'बादल' के साथ आप किन-किन चीजों को जोड़ना चाहेंगे? उनके नाम लिखिए–

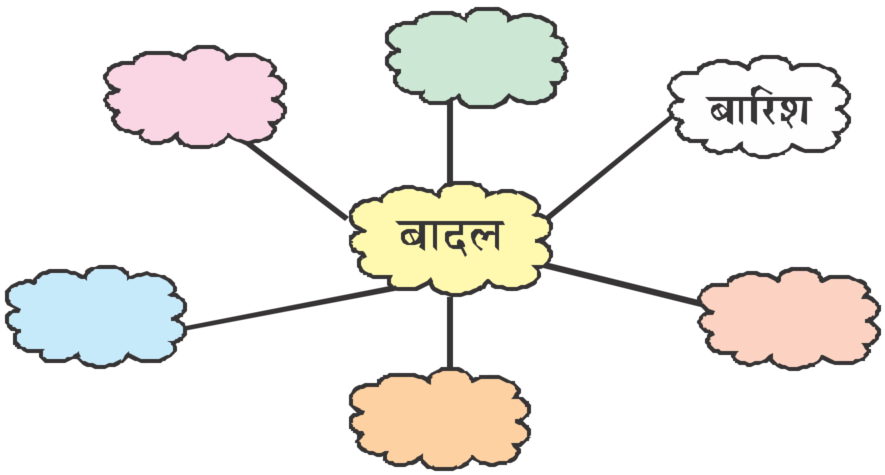

6. 'बादल' से जुड़ी नीचे लिखी कविताओं को पढ़िए। इनमें 'बादल' के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है। उन्हें छाँटकर लिखिए।

मेघ बन ठन कर आए
साथ बारिश की बूँदें लाए।

आज आए घन घनघोर,
उन्हें देख नाचने लगे मोर।

काले बदरा काले बदरा,
पानी तो बरसाओ।

क्या आप जानते हैं कि –

- सभी बादलों से बारिश नहीं होती।
- बादलों के आधार पर उनके अलग-अलग नाम होते हैं।
- इनमें से तीन प्रकार के बादल सबसे खास होते हैं-

★ **रेशेदार बादल** घने रेशे जैसे दिखाई पड़ते हैं।
ये खुद तो बारिश नहीं करते लेकिन बताते हैं कि कहीं तेज़ आँधी-तूफ़ान चल रहा है।

★ **कपासी बादल** कपास के ढेरों की तरह दिखते हैं।
इनकी तली गहरे रंग की और सपाट होती है। जबकि ऊपरी हिस्सा गोल सुंदर आकार का और चमकदार, सफेद होता है। कभी-कभी ये हवा के कारण बहकर एक-दूसरे से मिल जाते हैं और फिर बारिश लाने वाले घने होकर गरजने-चमकने वाले बादलों का रूप ले लेते हैं।

★ **फैले हुए बादल** तब बनते हैं जब ढेर सारे कपासी बादल मिलकर एक निरंतर परत बना लेते हैं। ये ज्यादा घने और काले होते हैं और अक्सर बूँदाबाँदी लाते हैं।

11. एक पत्र की आत्मकथा

मैं एक पत्र हूँ। मैं उम्र में वहुत बड़ा नहीं हूँ। हाल ही में मेरा जन्म 03 अगस्त 2011को हुआ। मेरा जन्म स्थल गया जिले का धरमपुर गाँव है। धरमपुर में एक लड़की रहती है। उसका नाम शांति है। शांति पाँचवीं की छात्रा है। शांति का एक चचेरा भाई है, रमेश। रमेश रहता है दिल्ली में।

03 अगस्त की शाम शांति ने एक सुन्दर-सी राखी बनाई। उसने रमेश को एक पत्र लिखा और एक लिफाफे में पत्र एवं राखी को वंद कर दिया । इस तरह मेरा जन्म हुआ। शांति की माँ दूसरे दिन पास के कस्बा बिशनपुर जाने वाली थी। शांति ने माँ से कहा कि ज़रा रमेश भाई की चिट्ठी बिशनपुर की पत्र-पेटी में डाल दीजिएगा। अगले दिन मैं माँ के साथ बिशनपुर पहुँचा। वहाँ बहुत चहल-पहल थी। मैं इसका मज़ा ले ही रहा था कि ढप! मैं एक काली-सी गुफा में जा कर गिर पड़ा। यह पत्र-पेटी थी। मैं पत्रों के ढेर पर जा गिरा। अरे! ये तो मेरे जैसे थे। बस फिर क्या था? हो गयी दोस्ती!

मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। पर मेरे कुछ दोस्त फीके-नीले रंग के थे, कुछ एक पीले कार्ड थे, कुछ सफेद या खाकी लिफाफे पहने हुए थे, कुछ लंबे थे, तो कुछ चौड़े। वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे।

अब मुझे चिंता होने लगी कि मैं दिल्ली में रमेश के घर तक कैसे पहुँचूंगा। कहीं और पहुँच गया तो? किसी को कैसे पता चलेगा कि मुझे कहाँ जाना है?

एक सफ़ेद लिफाफा जिस पर लाल व नीली धारियाँ बनी थीं, सबसे बातें करने लगा। कहने लगा, "पता है, मुझे अमरीका देश जाना है। रास्ते में बहुत बड़ा समुद्र

है, इसलिए मैं रेल या बस से नहीं, हवाई जहाज से अमरीका पहुँचूँगा। सुना है जब हवाई जहाज नहीं बने थे, तब समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाज से पत्र भेजे जाते थे।''

खटाक! ताला खुलने की-सी आवाज़ आई। पेटी में उजाला हुआ। किसी का हाथ अंदर आया और हम सब पत्रों को निकाल-निकाल कर एक थैले में डालने लगा। थैले में बंद होने से पहले मैंने देख लिया कि यह खाकी वर्दी पहने हुए डाकिया है। उसने पेटी में ताला डाला और हमारे बोरे को साइकिल पर रखकर चल पड़ा। जल्दी ही हम बिशनपुर डाक घर पहुँच गए। डाकिए ने हमारे बोरे को डाकघर की मेज़ पर उलट दिया। फिर वह एक भारी ठप्पे से हम पर लगे टिकट पर सील लगाने लगा– ठप-ठपा-ठप, ठप-ठपा-ठप! ठप! उसके हाथ बड़ी तेज़ी से चल रहे थे। सील लगाना खत्म करके उसने हमें इकट्ठा किया और एक दूसरी मेज़ पर पटक दिया।

मैंने सोचा, "अब कुछ देर चैन की साँस लेकर सुस्ता लूँ।" पर वहाँ डाकघर के दो लोग आए और उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। इस तरह पत्रों के एक ढेर के बजाय दो ढेरियाँ बन गईं। एक गया जिले की और एक जिले के बाहर की।

तब तक डाकघर की एक महिला दो खाकी बोरे लेकर मेज़ के पास आईं और बोलीं, "जिले के बाहर वाली डाक आर.एम.एस. के बोरे में डाल दो और जिले वाली डाक गया डाकघर के बोरे में।

डाकिए ने वैसा ही किया। मुझे आर.एम.एस. के बोरे में डाला गया। मेरा दिल बैठा जा रहा था ''मुझे गया क्यों ले जा रहे हैं? मुझे तो दिल्ली जाना है और ये आर.एम.एस क्या बला है?'' न जाने कैसे उस बोरे ने मेरे मन की बात सुन ली। मुझे सहलाते हुए बोलने लगा ''दिल्ली बहुत दूर है। वहाँ तुम रेलगाड़ी से जाओगे। दिल्ली जाने वाली रेलगाड़ी गया स्टेशन पर रुकती है, इसलिए मैं तुम्हें गया आर.एम.एस. ले जा रहा हूँ। आर.एम.एस. का अर्थ है–'रेलवे मेल सर्विस'। हर बड़े स्टेशन पर इसका कार्यालय है। यहाँ पर आसपास की डाक इकट्ठी की जाती है और दिशावार छाँटी जाती है। फिर उन्हें ट्रेन से भेज दिया जाता है।" मुझे बोरे की बात से तसल्ली हुई। हम कब गया पहुँचे मुझे पता ही नहीं चला।

एकाएक से किसी ने बोरे का मुँह खोला और बाहर की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं। एक डाकिए ने सारे पत्र बाहर मेज़ पर उलट दिए। चार–पाँच लोग फुर्ती से आए और फिर शुरू हुई छँटाई। मैं ढेर के ऊपर की ओर था। मैंने जल्दी से अपने आस–पास नज़र दौड़ाई एक बहुत बड़े कमरे में खूब सारे लोग थे। अलग–अलग मेज़ों पर छँटाई चल रही थी। लेकिन यह क्या? दीवार में खूब सारे छोटे–छोटे खानों वाली खुली आलमारियाँ थीं। ऐसे ही कुछ खाने आड़े में भी बने थे। हर खाने के ऊपर कुछ लिखा था। हमारे अलावा और बहुत सारे पत्र थे, बहुत सारे बंद बोरे भी।

एक मैडम कुछ पत्र लेतीं और उन पर लिखा पता पढ़–पढ़ कर अलग–अलग खानों में डाल देती। मेरी बारी अब आई यह सोचकर मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। तभी मैडम ने मुझे एक अंधेरे–से खाने में डाल दिया। उसके ऊपर लिखा था–**दिल्ली**। वहाँ और भी कई सारे पत्र थे। उन सभी पर दिल्ली के पते लिखे थे। थोड़ी देर बाद एक डाकिए ने हमें निकाल कर एक बोरे में डाल कर बन्द कर दिया। बोरे में पड़े–पड़े मुझे नींद लग गई। हर थोड़ी देर में झटका पड़ता मानो बोरे को उठा कर कोई कहीं पटक रहा हो। जब मेरी नींद खुली तो ज़मीन हिल रही थी और रह–रहकर सीटी की आवाज़ आ रही थी। मैं समझ गया कि मुझे गया जंक्शन से दिल्ली की रेलगाड़ी में चढ़ा दिया गया है।

पूरे 18 घंटे चलने के बाद हम दिल्ली स्टेशन पहुँचे। गाड़ी से निकाल कर हमें एक लाल रंग की छोटी बस में लाद दिया गया। इस तरह मैं दिल्ली के बड़े डाकघर में पहुँचा। वहाँ के डाकिए ने मुझे अपनी थैली में डाल दिया और हम साइकिल पर निकल पड़े। हर ज़गह मेरी मुलाकात नए पत्र मित्रों से होती और मेरे पुराने साथी छुटते रहते। डाकिये ने मुझे किसी के घर के दरवाजे के नीचे से अंदर सरका दिया। थोड़ी देर बाद रमेश की माँ बाहर से घर आई तो उन्होंने मुझे उठाकर मेज़ पर रख दिया। शाम को जब रमेश घर लौटा तो मुझे पाकर वह बहुत खुश हुआ। राखी के दिन रमेश ने वही राखी बाँधी और मुझे उठाकर और पत्रों के साथ एक आलमारी में रख दिया। यहीं अब मैं एक आराम की ज़िन्दगी बिता रहा हूँ।

शब्दार्थ

बौछार	–	भरमार
विविध	–	अनेक
पत्र-पेटी	–	लेटर-बॉक्स
वर्दी	–	पोशाक
आर.एम.एस.	–	रेलवे मेल सर्विस (रेल मेल सेवा)
तसल्ली	–	ढाढ़स

अभ्यास

बातचीत के लिए

(क) डाकिया चिट्ठी के अलावा और क्या-क्या बाँटता है?

(ख) यदि आपको पत्र लिखने का मौका मिले तो, आप किसे पत्र लिखना चाहेंगे और क्यों?

(ग) आप उस पत्र में क्या-क्या लिखेंगे?

(घ) जिसको पत्र लिखा जा रहा है, उस तक पत्र पहुँच जाए इसके लिए पत्र पर क्या लिखना होगा?

पाठ से

(क) एक पत्र की आत्मकथा कौन कह रहा है और किसके बारे में कह रहा है?

(ख) हवाई जहाज से भेजे जाने वाले पत्र को आप कैसे पहचानेंगे?

(ग) आर. एम. एस. का क्या अर्थ होता है?

(घ) आर. एम. एस. कार्यालय में पत्रों के साथ क्या-क्या होता है?

(ङ) डाक से भेजे जाने वाले पत्र पर डाक टिकट क्यों लगाते हैं?

(च) पत्र पर लगे डाक टिकट पर सील क्यों लगाया जाता है?

(छ) भेजे जाने के दौरान विभिन्न स्थानों पर पत्रों की छँटाई की जाती है, क्यों?

भाषा के नियम

(1) नीचे दिए गए शब्द-जोड़ों से वाक्य बनाइए -

भीड़-भाड़ – ....

चहल-पहल – ....

आस-पास – ....

अलग-थलग – ....

(2) नीचे दिए गए वाक्यों में एक शब्द किसी दूसरे की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द को 'विशेषण' कहते हैं। वाक्यों में विशेषण शब्दों पर घेरा लगाइए –

(क) शांति ने सुन्दर-सी राखी बनाई।

(ख) मैं एक काली-सी गुफा में जाकर गिर पड़ा।

(ग) मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था।

(घ) डाकिया खाकी वर्दी पहने हुए था।

(ङ) पहले समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाजों से पत्र भेजे जाते थे।

(च) तुम डरो नहीं, हम तुम्हें सही ठिकाने पर पहुँचा देंगे।

३. बताइए, रेखांकित सर्वनाम शब्द किसके लिए आए हैं–

(क) <u>वे</u> सब अलग-अलग जगह जा रहे थे। --------------------

(ख) <u>मैं</u> तो एक पीले लिफाफे में बंद था। --------------------

(ग) <u>उसने</u> पेटी में ताला डाला । --------------------

(घ) <u>उन्होंने</u> हमें बाँटना शुरू किया। --------------------

(ङ) <u>उसने</u> रमेश को एक पत्र लिखा। --------------------

अनुमान लगाइए

(i) शांति ने 03 अगस्त 2011 को पत्र लिखा। रमेश तक वह पत्र कब पहुँचा होगा?

(ii) शांति का पत्र कहाँ-कहाँ से गुजरते हुए रमेश तक पहुँचा?

[माँ] —> [थैली] —> [ ] —> [ ] —> [ ] —> [ ] —> [रमेश]

पता कीजिए

हमलोग पत्र लिखने अथवा भेजने के लिए डाकघरों से क्या-क्या खरीदते हैं? आजकल इनके क्या मूल्य हैं?

नाम	मूल्य

पत्र लिखिए

अपनी पाठ्यपुस्तक में से सबसे मज़ेदार कहानी के बारे में अपनी मामीजी को पत्र लिखिए ।

संवाद

1. पत्र जब पेटी में बाकी पत्रों से मिला तो उनके बीच क्या बातचीत हुई होगी? कल्पना कीजिए और उनके संवाद बोलिए।
2. भारी ठप्पे से पत्रों पर सील लगाने पर उन्हें कैसा लगा होगा? उन्होंने डाकिए से क्या कहा होगा? कल्पना कीजिए और संवाद बोलिए।

कुछ इस तरह

इस पाठ में पत्र ने अपनी आत्मकथा बताई है।

1. आप भी अपने बारे में बताते हुए अपनी आत्मकथा लिखिए।

बूझो तो जानें

दो रुपए का एक लिफाफा,
मिलता था अगर पहले,
आज डाकघर के लिफाफे
दो मिलते ले दहले ।।
बारह रुपए दे मुनिया ने,
माँगे पाँच लिफाफे,
कितने शेष और फिर देकर,
मुनिया गहे लिफाफे।

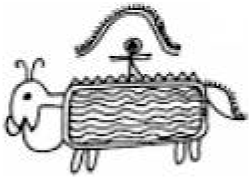

12. कविता का कमाल

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी विधवा माँ के साथ गाँव में रहता था।

माँ – बेटा बहुत गरीब थे और उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल-कूद में ही समय बिता देता था।

तंग आकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, "अब मैं तुझे बैठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।"

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि क्या करे? कैसे कमाए पैसे? अचानक उसे डुगडुगी पीटने की आवाज़ सुनाई दी।

"सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फ़ियाँ इनाम में मिलेंगी।"

मदन चौकन्ना हो गया। 'सौ अशर्फ़ियाँ!' यह तो बना बनाया मौका था। मदन राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा वहाँ पहुँचकर? लेकिन वह मस्त स्वभाव का था इसीलिए

अपनी गर्दन झटकते हुए उसने सोचा कि रास्ते में कुछ न कुछ सूझ ही जाएगा।

थोड़ी दूर पहुँचा तो एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से ज़मीन खोदने में लगा था। मदन ने सोचा कि क्यों न अभी अपनी कविता शुरू की जाए।

बोला, "खुदुर-खुदुर का खोदत है?" यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दोहराते हुए चलता गया। वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?" मुस्कराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में एक पेड़ की डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। वह पत्तियों के बीच से सिर निकालकर इधर-उधर झाँक रही थी।

देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, "ताक-झाँक का खोजत है?" तीनों पंक्तियों को रटते वह चलता गया। रटते-रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई।

"हम जानत, का ढूँढ़त है!" अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी, 'सर्र' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था।

तुरंत ही उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर ली, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो, हम देखत है? हमसे ना बच सकत है!"

अब सिर्फ़ एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्चिंत था कि वह पंक्ति भी चलते-चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, "भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?" उस आदमी ने उत्तर दिया।

मदन ने सोचा कि ज़रूर यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, "आप कौन हैं, साहब?"

उत्तर मिला, "धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह।"

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी। 'धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!' क्या बढ़िया शब्द थे। उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता की अंतिम पंक्ति बना डाली।

वह खुशी-खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई,

खुदुर-खुदुर का खोदत है?
सुरुर-सुरुर का पीबत है?
ताक-झाँक का खोजत है?
हम जानत, का ढूँढ़त है!
सरक-सरक कहाँ भागत है?
जानत हो, हम देखत है।
हमसे ना बच सकत है!
धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!

राजमहल में कवि-सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक-एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुनने वाले एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ होगा इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दोहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाएँ।

संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खज़ाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से

एक चोर वही धन्नूशाह था जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज़ में राजा साहब बोलते जा रहे थे, "खदुरु-खदुरु का खोदत है?"

चोरों ने सुना तो चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ ज़मीन को मुलायम करने के लिए पानी लाए थे। धन्नूशाह ने उठकर एक-आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?"

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर-उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है?

राजा ने फिर कहा, "ताक-झाँक का खोजत है? हम जानत, का ढूँढ़त है!"

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे।

पर राजा की आवाज़ आई, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो, हम देखत है? हमसे ना बच सकत है! धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!

धन्नूशाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, 'अब कोई चारा नहीं। बस राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।' दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, "क्षमा कर दीजिए महाराज! अब भूलकर भी ऐसा

काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खज़ाना सही सलामत है।"

राजा साहब हक्के-बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खज़ाना लुटते-लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।"

मदन को सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी-खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के रहने के लिए काफ़ी धन था।

शब्दार्थ

डुगडुगी पीटना	= (ढोल-बाजे के साथ) प्रचार करना, सूचना देना
निश्चिंत	= चिंता से मुक्त
मन में लड्डू फूटना	= मन ही मन खुश होना।
मालामाल कर देना	= काफी धन देना
हक्का-बक्का हो जाना	= हैरान रह जाना
अशर्फ़ियाँ	= पुराने जमाने में प्रचलित सोने-चाँदी के सिक्के
चौकन्ना	= सावधान

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. राजमहल क्या है? इसमें कौन-कौन लोग रहते होंगे?
2. सुखी रहने के लिए मदन एवं उसकी माँ ने सोने-चाँदी से क्या-क्या खरीदा होगा?
3. राजा का खजाना लुटने से बच गया, कैसे?
4. किन-किन अवसरों पर डुगडुगी पीटी जाती होगी, इनकी सूची बनाइए।
5. आप किन-किन कामों के लिए डुगडुगी पीटेंगे? इनकी भी सूची बनाइए।
6. किसी बात को लोगों तक पहुँचाने के और कौन-से तरीके हो सकते हैं?

पाठ से

1. माँ ने तंग आकर मदन से क्या कहा?
2. मदन को कविता रचने की प्रेरणा किन-किन चीजों से मिली?
3. धन्नूशाह को महल का रास्ता इतनी अच्छी तरह क्यों मालूम था?
4. मदन को कविता रचने की आवश्यकता क्यों पड़ी?
5. राजा ने मदन को शाबासी व इनाम क्यों दिया?
6. **किसने, किससे कहा?**

(क) अब मैं तुझे बैठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।

(ख) राजदरबार में कवि सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फ़ियाँ इनाम में मिलेगी।

(ग) भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?

(घ) "क्षमा कर दीजिए महाराज!"

(ङ) "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है"।

----

(7) पाठ के आधार पर सही (✓) और गलत (X) का निशान लगाइए।

(क) मदन अपनी विधवा माँ के साथ गाँव में रहता था। ☐
(ख) राजमहल में एक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था। ☐
(ग) मदन चलते-चलते एक नदी के पास पहुँचा। ☐
(घ) मदन को राजा ने सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया। ☐

आपकी समझ से

1. (क) ज्यादा टी॰ वी॰ देखने के कारण तंग आ कर आपकी माँ या पिताजी आपको क्या कहते हैं?

(ख) मदन की कविता को सभी लोग विचित्र क्यों मान रहे थे?

2. अशर्फ़ियाँ क्या होती हैं? अगर कोई आपको सौ अशर्फ़ियाँ दे तो आप उनका क्या करेंगे?

भाषा के नियम

1. 'रटते-रटते' उसे अपने आप एक पंक्ति सूझ गई। इस वाक्य में 'रटते' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। इस तरह के अन्य शब्द पाठ से ढूँढ़कर लिखिए –

-------------- --------------- -------------- -------------- --------------

2. इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए अर्थ बताइए–

(क) काटो तो खून नहीं –

(ख) हक्का-बक्का रह जाना–

(ग) दया की भीख माँगना–

(घ) मालामाल कर देना–

(ङ) मन में लड्डू फूटना–

(च) काम तमाम कर देना–

3. पाठ में से वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल वाले तीन-तीन वाक्य छाँटकर लिखिए –

वर्तमानकाल

(i) --

(ii) --

(iii) --

भूतकाल

(i) --

(ii) --

(iii) --

भविष्यत्काल

(i) --

(ii) --

(iii) --

4. पाठ में कविता को 'विचित्र' कहा गया है। आप कविता के लिए किन विशेषण शब्दों का प्रयोग करेंगे?

....

5. इनके लिए भी दो-दो विशेषण शब्द सुझाइए–

(i) माँ – ---------------- ----------------

(ii) महल – ---------------- ----------------

(iii) मदन – ---------------- ----------------

विराम-चिह्न

नीचे दिए गए वाक्यों में सही विराम-चिह्न लगाइए –

(क) मदन ने कहा महाराज मैंने बहुत अच्छी कविता बनाई है

(ख) चोरों ने सारा धन चुरा लिया

(ग) कहाँ चल दिए

(घ) बाप रे इतना पैसा कहाँ से आया

(ङ) क्या सुरुर सुरुर बोल रहे हो

संवाद और अभिनय

1. 'कविता का कमाल' कहानी का कक्षा या विद्यालय में मंचन कीजिए।
2. आप इस नाटक में किस पात्र की भूमिका निभाना चाहेंगे और क्यों?
3. मंचन के लिए आपको किन-किन पात्रों और सामानों की ज़रूरत पड़ेगी? एक सूची बनाइए।

आपकी कल्पना और कलम

1. अगर मदन यह कहानी सुनाता तो कैसे सुनाता ? मदन की जगह स्वयं को रखते हुए 'कविता का कमाल' कहानी सुनाइए और लिखिए।
2. कहानी का यह शीर्षक किस आधार पर रखा गया होगा?
3. आप कहानी के लिए कोई दो मज़ेदार शीर्षक सुझाइए। साथ में यह भी बताइए कि आपने ये शीर्षक क्यों रखे?
4. **पाठ में से कोई तीन सवाल बनाइए–**

   (क) जिनके उत्तर हाँ / नहीं में होगा ।

   (ख) जिनमें क्यों का जवाब देना होगा ।

   (ग) जिनमें क्या का जवाब देना होगा ।

बूझो तो जाने

दीदी की शादी में आए,
सजधज सोलह बाराती,
बाराती जन जो भी आए,
उनको गुझिया ही भाती।।
चार–चार तो बड़ों–बड़ों को
मुनिया को दो दी जातीं।
आठ बड़े तब शेष लड़कियाँ,
कुल कितनी गुझिया खातीं।।

13. कदम्ब का पेड़

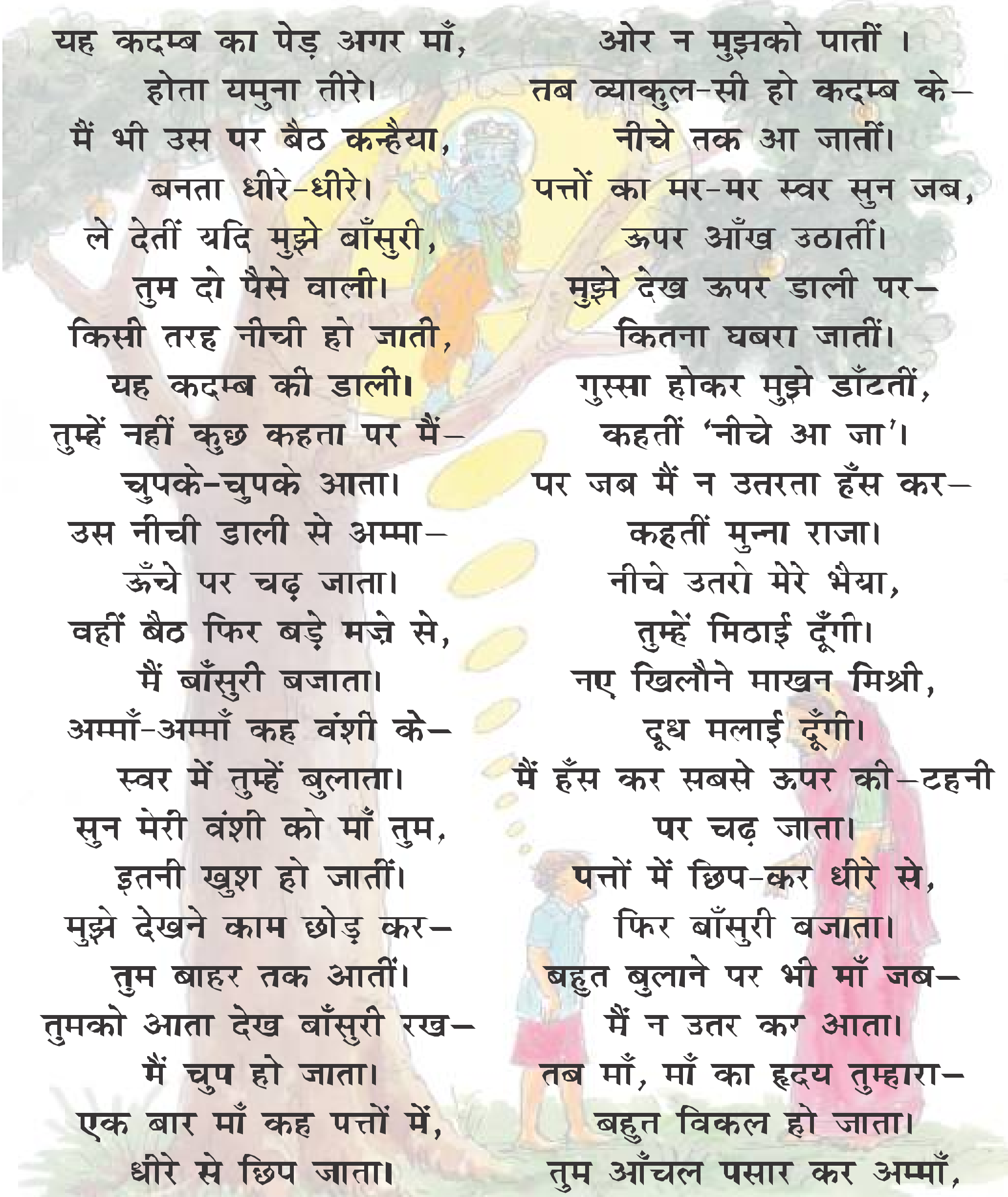

यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ,
होता यमुना तीरे।
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया,
बनता धीरे-धीरे।
ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी,
तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीची हो जाती,
यह कदम्ब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं–
चुपके-चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्मा–
ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से,
मैं बाँसुरी बजाता।
अम्माँ-अम्माँ कह वंशी के–
स्वर में तुम्हें बुलाता।
सुन मेरी वंशी को माँ तुम,
इतनी खुश हो जातीं।
मुझे देखने काम छोड़ कर–
तुम बाहर तक आतीं।
तुमको आता देख बाँसुरी रख–
मैं चुप हो जाता।
एक बार माँ कह पत्तों में,
धीरे से छिप जाता।
तुम हो चकित देखतीं चारों–
ओर न मुझको पातीं ।
तब व्याकुल-सी हो कदम्ब के–
नीचे तक आ जातीं।
पत्तों का मर-मर स्वर सुन जब,
ऊपर आँख उठातीं।
मुझे देख ऊपर डाली पर–
कितना घबरा जातीं।
गुस्सा होकर मुझे डाँटतीं,
कहतीं 'नीचे आ जा'।
पर जब मैं न उतरता हँस कर–
कहतीं मुन्ना राजा।
नीचे उतरो मेरे भैया,
तुम्हें मिठाई दूँगी।
नए खिलौने माखन मिश्री,
दूध मलाई दूँगी।
मैं हँस कर सबसे ऊपर की–टहनी
पर चढ़ जाता।
पत्तों में छिप-कर धीरे से,
फिर बाँसुरी बजाता।
बहुत बुलाने पर भी माँ जब–
मैं न उतर कर आता।
तब माँ, माँ का हृदय तुम्हारा–
बहुत विकल हो जाता।
तुम आँचल पसार कर अम्माँ,
वहीं पेड़ के नीचे।

ईश्वर से कुछ विनती करतीं,
बैठी आँखें मीचे।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं,
धीरे-धीरे आता।
और तुम्हारे फैले आँचल
के नीचे छिप जाता।
तुम घबरा कर आँख खोलतीं,

पर माँ, खुश हो जातीं,
जब अपने मुन्ना राजा को–
गोदी में ही पातीं।
इसी तरह कुछ खेला करते–
हम तुम धीरे-धीरे
यह कदंब का पेड़ अगर,
माँ होता यमुना तीरे।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

चकित होना	–	हैरान होना
व्याकुल	–	बेचैन
स्वर	–	आवाज़
विनती करना	–	प्रार्थना करना

अभ्यास

कविता में से

1. बालक कन्हैया क्यों बनना चाहता है?
2. माँ का हृदय व्याकुल क्यों हो जाता है?
3. माँ ईश्वर से क्यों विनती करती?
4. बच्चे को नीचे उतारने के लिए किन-किन प्रलोभनों की बात की गई है?
5. बालक किसके साथ और कौन-सा खेल खेलना चाहता है?

आपके अनुभव

1. इस कविता की कौन-कौन सी पंक्तियाँ आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों ?
2. अपनी माँ को खुश करने के लिए आप कौन-कौन से काम करते हैं?
3. पेड़ पर चढ़ने का अपना कोई किस्सा या अनुभव सुनाइए ।
4. **नीचे लिखे वाक्यों को अपने अनुभव के आधार पर पूरा कीजिए -**

- मेरी माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं, क्योंकि ------------------------------------

  ----

- मेरी माँ चाहती हैं कि --

- **मैं चाहता हूँ कि मेरी माँ** --

कैसे पता चला ?

कविता में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि -

1. उसका बच्चा पेड़ पर बैठा है।
2. किसी कठिनाई में हम ईश्वर को याद करते हैं।

शब्दों की दुनिया

1. **'कल'** शब्द में **'वि'** जोड़ने से शब्द बनता है–**'विकल'**।
'कल' का अर्थ होता है–चैन, आज के पहले का दिन, आज के बाद आने वाला दिन, मशीन। **'वि'** लगने से अर्थ बदल जाता है। **'विकल'** का अर्थ है **'बेचैन'**।
आप भी नीचे दिए गए शब्दों में **'वि'** लगाकर नए शब्द बनाइए–

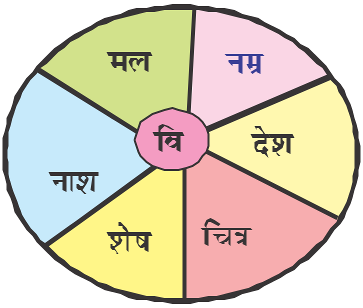

------------------ ------------------ ------------------

------------------ ------------------ ------------------

2. सही शब्दों से पत्र को पूरा कीजिए –

पक्षी, झाड़ियाँ, गेट, फूल, फव्वारा, नीला, पेड़, बगीचे

प्रिय मित्र अली,

इस पत्र में मैं तुम्हें अपने ---------- के बारे में लिख रहा हूँ। मेरे बगीचे में रंग-बिरंगे ---------- खिले हैं। वहाँ आम के बड़े-बड़े पाँच ---------- हैं। पानी का एक ---------- भी है। वहाँ सुंदर ---------- उगी है। ऊपर ---------- आसमान दिखाई देता है। आसमान में ---------- उड़ते रहते हैं। बगीचे के अंदर जाने के लिए एक बड़ा ---------- है। अगली बार आओगे तो तुम्हें बगीचा दिखाऊँगा।

तुम्हारा मित्र
ननकू

3. वचन के सही रूप से खाली स्थान को भरें –

- वह ------------ में छिप गया। (पत्ता)
- पेड़ की ------------ नीचे आ गई थी। (डाली)
- कन्हैया के पास एक ------------ है। (बाँसुरी)
- चिड़िया ने ------------ पर घोंसला बनाया। (पेड़)
- हमारे बगीचे में आम के ------------ की कतारें हैं। (पेड़)
- मामाजी नया ------------ लाए। (खिलौना)
- उसने मेरे ------------ सँभालकर रखे थे। (खिलौना)
- माँ की ------------ भर आईं। (आँख)

4. इस कविता में अनेक क्रिया शब्द आए हैं, जैसे – बुलाना, देखना, चढ़ना, बजाना आदि।

कविता में से कोई पाँच पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए जिनमें क्रिया शब्द आए हैं। उन पंक्तियों में क्रिया शब्दों पर घेरा लगाइए।

- --
- --
- --
- --
- --

5. कविता में माँ बालक को कई नामों से पुकारती है – मुन्ना, राजा, भैया। आपकी माँ आपको क्या-क्या कहकर पुकारती हैं ?

--------------------- ----------------------- -----------------

6. नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए –

- एक बार माँ कह पत्तों में, <u>धीरे से</u> छिप जाता।
- इसी तरह कुछ खेला करते, हम तुम <u>धीरे-धीरे</u>।

दोनों वाक्यों में 'धीरे' शब्द का प्रयोग हुआ है ।

1. दोनों वाक्यों में धीरे' शब्द के अर्थ में क्या अंतर है?
   पहले वाक्य में 'धीरे से' शब्द का अर्थ है-
   - चुपचाप
   - बिना आहट के
   - किसी को पता न चले

   जबकि दूसरे वाक्य में धीरे-धीरे का अर्थ है -
   - आराम से
   - तसल्ली से

   वाक्यों के रेखांकित अंशों का अर्थ समझाइए –

   - <u>टप्</u>! पेड़ से आम टपका ।
   - <u>टप् - टप् - टप्</u> ! पेड़ से आम टपकने लगे ।

2. नीचे दी गई वर्ग पहेली में खाने की आठ चीज़ों के नाम दिए गए हैं। खोजकर लिखिए–

चा	ज	चा	व	ल
ट	ले	ह	ल	वा
च	बी	दा	खी	र
ट	प	ल	पू	री
नी	क	खि	च	ड़ी

------------------------ ------------------------ ------------------------

------------------------ ------------------------ ------------------------

कुछ करने के लिए

1. आपके आस-पास कौन-कौन से पेड़ हैं? उनके नाम लिखिए।
2. पेड़ों से होने वाले फायदों के बारे में बताइए।
3. अपने बुजुर्गों से बात करके पता कीजिए कि उनके समय में गाँव में पेड़ों की संख्या अधिक थी या आज अधिक है। यदि पेड़ों की संख्या कम हुई है तो उसके क्या कारण हैं? पेड़ों की संख्या बढ़ाने के उपाय खोजिए।
4. इस कविता को कहानी के रूप में सुनाइए और लिखिए।
5. श्री कृष्ण बचपन में क्या-क्या शरारतें करते थे? पता कीजिए, पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।